पंजीयन संख्या : 68939 /98 अंक – 25, वर्ष – 24

ज्ञान तरंग

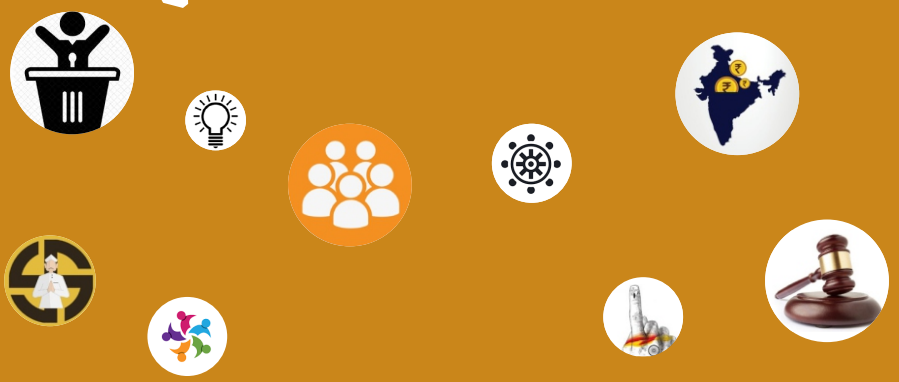

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

437

- : सम्पादक :-
बजरंग लाल अग्रवाल
रामानुजगंज (छ.ग.)
सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01/12/2023
प्रकाशन की तारीख 16/11/2023
पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचास पैसे)
पेज संख्या - 24

“ शराफत छोड़ो, समझदार बनो ”

“ सुनो सबकी, करो मन की ”

“ समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता ”

“ समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार ”

“ चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे ”

“ हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए ”

गांधी गांधीवाद और गांधीवादी

जब भी समाज में कोई विचारक गंभीर विचार मंथन के बाद कुछ निष्कर्ष निकालता है तो वह निष्कर्ष समाज की प्रचलित मान्यताओं से कुछ भिन्न होता है। यदि उक्त निष्कर्ष समाज की तात्कालिक समस्याओं के समाधान में निर्णायक परिणाम देता है तो उक्त विचारक महापुरूष बन जाता है। उक्त महापुरूष के निष्कर्षो को सामान्य लोग बिना विचार किये ही स्वीकार करने लग जाते हैं। विचारक से महापुरूष बनने तक के बीच के कालखंड में विचारों को सामाज तक पहुचाने के लिये एक संगठन की आवश्यकता होती है। ऐसा संगठन उक्त विचारक के जीवन काल में भी बन सकता है और जीवन पश्चात भी। संगठन विचारों को समाज तक पहुचाने की व्यवस्था करता है और जब उक्त विचार सफल प्रमाणित हो जाता है तब उक्त विचार को धीरे–धीरे रूढ़ बनाकर उन पर कुन्डली मारकर बैठ जाता है। इस तरह संगठन विचारों की कब्र होता है। संगठन के माध्यम से विचार सुरक्षित अदृश्य और दीर्घकालिक हो जाते है, किन्तु अनुपयोगी हो जाते है। संगठन विचारों को पुनर्विचार से दूर कर देते है। तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिये जब कोई नया विचार सामने आता है तो उक्त संगठन से महापुरूष को आक्रमण झेलने पड़ते हैं। प्रत्येक संगठन अपने महापुरूष के साथ किये गये दुर्व्यवहार को अत्याचार घोषित करता है जबकि वह स्वयं भी आगे वाले विचारकों के साथ बिल्कुल वैसा ही अत्याचार करना शुरू कर देता है।

महात्मा गांधी ने गुलाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। उन्होने इस संग्राम के लिये सत्य और अंहिसा को मुख्य मार्ग घोषित किया। विदेशी वस्तु वहिष्कार उनका सहायक मार्ग था। धार्मिक, सामाजिक जातीय एकता उक्त संग्राम के उपमार्ग तथा चरखा खादी और गांधी टोपी उक्त संग्राम की पहचान स्वरूप थें। लक्ष्य सिर्फ एक था, बिल्कुल स्पष्ट था, और सर्वमान्य था ''राष्ट्रीय स्वराज्य''। स्वराज्य के लिये उन्होने मार्ग, सहायक–मार्ग, उपमार्ग, सहायक उपमार्ग आदि तय किये और तद्नुसार ही वे इन मार्गों की उपयोगिता भी मानते थें। गांधी जी ने सत्य और अंहिसा से कभी समझौता नहीं किया क्योंकि यह उनका मुख्य मार्ग था। चरखा, खादी, गांधी टोपी से वे समझौते के लिये तैयार थे। यदि कोई व्यक्ति भिन्न वस्त्र टोपी या भिन्न संगठन वाला हो तो भी वे उसका बहिष्कार नहीं करते थें। गांधी के आन्दोलन में सब प्रकार के लोग शामिल थे चाहे वे गांधी जी के बताये कुछ उप मार्गो से असहमत ही क्यों न हो। गांधी जी ने अपने जीवन में किसी को अछूत नहीं माना क्योंकि उनके विचारों में अछूत कार्य होता है कर्ता नहीं। उन्होने नारा दिया ''पाप से घृणा करो पापी से नहीं''।

गांधीजी के बाद उनके विचारों ने गांधीवाद का स्वरूप ग्रहण किया। गांधीवाद की एक सर्वमान्य परिभाषा थी तत्कालीन समस्याओं का सत्य और अंहिसा के मार्ग से समाधान का प्रयत्न। इसमें तत्कालीन समस्याओं का समाधान लक्ष्य था और सत्य–अहिंसा मार्ग। गांधी के बाद गांधीवाद

विचारों से दूर होने लगा और धीरे–धीरे विचारों से हटकर संस्कार बन गया। अब उसकी परिभाषा बदल गई सत्य और अहिंसा के आधार पर ही समस्याओं के समाधान का प्रयत्न। सत्य और अंहिसा लक्ष्य बन गया समाधान गौण। समस्याओं की पहचान के लिये तात्कालिक परिस्थितियों के साथ कोई तालमेल नही रहा। इस तरह गांधीवाद धीरे धीरे गांधी से दूर हो गया।

ऐसे अधिकांश संस्कार प्रधान गांधीवाद से प्रभावित लोगों का समूह बना 'गांधीवादी'। इस संस्कारित समूह में शामिल अधिकांश लोग बहुत त्यागी चरित्रवान पद और धन के प्रलोभन से दूर उच्च संस्कारवान है किन्तु उनमें विचार एवं चिन्तन शक्ति का सर्वथा अभाव है। वे समस्याओं का ठीक–ठीक आकलन नहीं कर पातें। वे समस्याओं के समाधान के लिये अहिंसा को शस्त्र के रूप में प्रयोग न करके, अपने 'पलायन की ढाल' के रूप में उपयोग करते हैं। वे विपरीत विचार वालों से तर्क नहीं कर सकते। विचार मंथन इनके आचरण में दूर–दूर तक नहीं है।

गांधी विपरीत विचार रखने वाले को अछूत नहीं मानते थे जबकी गांधीवादी उन्हें अछूत मानकर घृणा करते है। गांधी जी स्वयं को इतना दृढ मानते थे कि उन पर असत्य के प्रभावी होने का कोई भय नहीं था परिणाम स्वरूप वे सबके बीच अपनी बात रखने का साहस करते थें। गांधीवादी इतने भयभीत है कि वे दूसरों के विचारों से प्रभावित होने के डर से उनसे दूर भागते है। गांधी जी वैचारिक विस्तार के पक्षधर थे गांधीवादी संगठन की सुरक्षा में ही परेशान रहते है। गांधी जी इस्लाम के खतरे को भली भांति समझते हुए भी एक रणनीति के अन्तर्गत उनसे समझौता करते थे। गांधीवादी इस्लाम के खतरे को न समझते है न समझना चाहते है। गांधी जी पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष थे वे साम्प्रदायिकता को कभी स्वीकार नहीं करते थे गांधीवादी धर्मरिपेक्षता का एक ही अर्थ समझते है संघ का विरोध और मुस्लिम तुष्टीकरण। गांधी जी साम्यवाद को घातक विचार मानते थे गांधीवादी साम्यवाद को समझते ही नहीं। मुझे तो आश्चर्य होता है कि हिंसा का सैद्धान्तिक रूप से भी और व्यावहारिक रूप से भी समर्थन करने वाले साम्यवादियों और आतंकवादी मुसलमानों के विरूद्ध गांधीवादियों का न कभी प्रत्यक्ष विरोध दर्ज होता है न परोक्ष। किन्तु यदि प्रशासन इनके विरूद्ध कोई कठोर कदम उठाता है तो गांधीवादी अवश्य ही विरोध में हल्ला करना शुरू कर देते है। गांधी जी सरकारीकरण के बिल्कुल विरूद्ध थे और समाजीकरण के पक्षधर थे। गांधीवादी समाजीकरण को समझते ही नहीं वे तो व्यापारीकरण के स्थान पर सरकारीकरण की वकालत तक करते है। गांधी जी निजीकरण के स्थान पर समाजीकरण चाहते थे, गांधीवादी निजीकरण का विरोध तो करते है किन्तु सरकारीकरण को या तो समझते नहीं या उनके संस्कार उनकी समझदारी में बाधक है।

आज देश में ग्यारह समस्याएँ बढ रही है। भारत के सभी राजनीतिक दल इस समस्याएं के समाधान की अपेक्षा दस प्रकार के नाटकों में सलग्न है। इन राजनैतिक दलों की नीतियाँ तो गलत है ही नीयत भी गलत है। साम्यवादी भी अपनी राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये इन दस

नाटकों को प्रोत्साहित करते रहते हैं। संघ परिवार की नीयत अर्ध राजनैतिक है। उसकी नीतियाँ साम्प्रदायिकता से भी प्रभावित है और पूंजीवाद से भी। परिणामस्वरूप वे सात समस्याओं के तो समाधान की चिन्ता करते है किन्तु आर्थिक असमानता और श्रम शोषण पर नियंत्रण की वे कभी नहीं सोचतें। मिलावट की रोकथाम के विषय में भी वे चुप ही रहते है क्योंकि मिलावाट और व्यापार का चोली दामन का संबंध बन गया है। सबसे दुखद यह है कि संघ परिवार साम्प्रदायिकता के विषय में भी स्पष्ट नहीं है। उसके अनेक कार्य तो साम्प्रदायिकता को मजबूत करने मे ही सहायक होते है। गांधीवादियों का वर्ग ही एक ऐसी जमात है जो राजनीति से संबंध नहीं रखती। किन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि इनकी नीयत ठीक होते हुए भी नीतियाँ देश की सभी ग्यारह समस्याओं के विस्तार में सहायक हो रही है। राजनीतिज्ञ जानबूझकर नाटक करते रहते हैं और गांधीवादी अनजाने में उसके पात्र बन जाते हैं। मेरा यह आरोप अत्यन्त ही गंभीर है और हो सकता है कि यह गलत ही हो किन्तु अब तक जो मैने समझा वह ऐसा ही है और यदि इस संबंध में कोई बहस छिड़ती है तो मैं उसका स्वागत ही करूँगा।

मैने गांधी को बहुत सुना और समझा है। गांधीवाद को भी प्रयोग करके पूरी तरह सफल होता देखा है और गांधीवादीयों से भी खूब चर्चा की है। गांधीवादी तर्क से बहुत भागते है। वे स्वयं को अन्य लोगों से अधिक श्रेष्ठ और आचरणवान मानकर दुसरों से घृणा करते है। किसी भी मामले मे अपनी बात कभी नहीं कहते बल्कि जो भी कहते है उसमें गांधी, विनोबा, जयप्रकाश का नाम जोड़े बिना न एक लाईन लिख सकते है न बोल सकते है न भाषण दे सकते हैं। उन्होने गांधी, विनोबा, जयप्रकाश को कभी समझने का प्रयास किया हो तब तो वे उनकी बात को अपने शब्दों में वर्तमान स्थितियों के साथ जोड़कर कह पातें। उन्हे तो सभी समस्याओं के समाधान के रूप में गांधी, विनोबा, जयप्रकाश के उस समय की परिस्थियों में कहे गये शब्दों के आधार पर बने उनके संस्कार ही पर्याप्त दिखते है और यही आज की सबसे बड़ी समस्या है। अधिकांश गांधीवादी इन बातों को समझते भी है और गुप्त रूप से चर्चा भी करते है किन्तु संस्कारित गांधीवादी के समक्ष वैचारिक गांधीवादी हमेशा भयभीत रहते है।

मैं महसूस करता हूँ कि स्वतंत्रता के बाद जिन ग्यारह समस्याओं का विस्तार हुआ है उसका समाधान सिर्फ गांधीवाद के पास है। न तो इसका समाधान पूंजीवाद के पास है न ही साम्यवाद के पास। ये दोनों ही या तो समस्याओं को बढ़ा सकते है या उससे लाभ उठा सकते है। गांधीवाद ही इन समस्याओं के समाधान का मार्ग निकाल सकता है और आज की समस्याओं के समाधान के निमित्त गांधीवाद को कोई गांधी ही परिभाषित कर सकता गांधीवादी नहीं, क्योंकि गांधी दाण्डी यात्रा समस्या के समाधान के लिये करते थे और ये लोग गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उनकी नकल करते हैं। गांधी जी के वस्त्र किसी पूर्व महापुरूष की नकल न होकर भारत के

आम निवासियों के दुख दर्द की असल पहचान थे, ये लोग नकल करके गांधी चश्मा, उनके कपड़े और उनकी दाण्डी यात्रा करके गांधी बनना चाहते हैं। जो गांधी को कभी नहीं समझा वह गांधीवाद को क्या समझेगा? इस लिए आज भारत को एक गांधी की जरूरत है एक ऐसे गांधी की जो अपना नाम गांधी रखे या कोई और, वह चाहे खादी पहने या कुछ और, वह दाण्डी यात्रा करे या कोई और यात्रा करे यह महत्वपूर्ण नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि वह गांधी सत्य और अहिंसा का डण्डा और झण्डा उठाकर ग्यारह समस्याओं के समाधान के लिए निकल पड़ेऔर भारत की सभी हिंसक, साम्प्रदायिक, जातीय स्वार्थान्ध, राजनैतिक शक्तियों को एक साथ चुनौती देकर घोषणा करें कि अब तक हमने बहुत सहा अब सहेगें नही, हम चुप रहेंगे नहीं,झंडा उठा लेगे हम।

मै जानता हूँ कि स्थापित संगठन ऐसे विचारों को बरदास्त नहीं कर सकते यदि किसी गांधी ने आकर गांधीवाद को इस ढंग से परिभाषित किया तो उक्त विचारक गांधी को सबसे पहले टकराव संस्कारित गांधीवादियों का ही झेलना पड़ेगा और वह टकराव किसी भी सीमा तक जा सकता है। यदि गांधी ने इस संस्कारित गांधीवादियों को समझाकर कोई मार्ग निकाल लिया तब तो उसके जीते जी ग्यारह समस्याओं के समाधान का मार्ग निकल सकता है अन्यथा उनका भी वही हाल होगा जो ईशामसीह का हुआ, गांधी का हुआ और तब उनके बाद उनके नाम से एक नया संगठन, नयावाद खड़ा होगा औंर दुनिया में वादों का एक नया वाद जुड़कर वाद–विवाद में सहायक बन जायेगा।

विविध विषयों पर बजरंग मुनि जी के महत्वपूर्ण विचार

1– गांधीवादी गांधी विचारों के विपरीत सिर्फ भवन संपत्ति खादी और चश्मे को ही गांधी विचार मानते है :

आज से 40 वर्ष पहले जब मोरारजी देसाई के बाद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनी थी उस समय इंदिरा गांधी ने जस्टिस पुरुषोत्तम दास कुदाल के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया था। यह आयोग सर्व सेवा संघ, गांधी शांति प्रतिष्ठान तथा दिल्ली के गांधी भवन पर कानूनी कार्रवाई करने के लिए अधिकृत किया गया था क्योंकि उस समय गांधीवादियों का एक बड़ा गुट इंदिरा गांधी के विरोध में था। इस कुदाल आयोग ने गांधीवादी भवनों को जांच के दायरे में लेकर कार्यवाही करने का विचार किया। बाद में गांधीवादियों ने कांग्रेस पार्टी से समझौता कर लिया, तब भी आयोग धीरे–धीरे लंबे समय तक जिंदा रहा। आयोग के बंद करने के बाद भी उस कुदाल आयोग की सभी फाइलें सुरक्षित रखी रही और जब कांग्रेस पार्टी चुनाव हार गई तब भाजपा सरकार ने उन फाइलों का गांधीवादियों के विरुद्ध उपयोग करना शुरू किया। फिर भी नरेंद्र मोदी सरकार किसी प्रत्यक्ष कार्यवाही से बचना चाहती थी। सर्व सेवा संघ को रेल विभाग से कई एकड़ जमीन मिली थी,

जिसका एक छोटा–सा टुकड़ा इंदिरा गांधी कला निकेतन को सरकार देना चाहती थी। लेकिन गांधीवादियों ने मोदी विरोध की नीयत से उसे छोटे से टुकड़े को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया। मेरे पास प्रसिद्ध गांधीवादी जेपी सिंह जी का फोन आया कि मैं दोनों पक्षों में समझौता करवाऊं। हालांकि मैं इस बीच में पड़ना नहीं चाहता था लेकिन फिर भी मैं इसके लिए तैयार हो गया कि गांधीवादी उसे छोटे–से जमीन के टुकड़े को इंदिरा गांधी कला निकेतन को दे दें और शेष जमीन उन गांधीवादियों के उपयोग के लिए सुरक्षित हो जाए। लेकिन गांधीवादी इसके लिए भी तैयार नहीं हुए। गांधीवादियों के सिर पर तो सिर्फ नेहरु परिवार छाया हुआ था।

कुछ दिन पहले मैंने एक प्रसिद्ध गांधीवादी को अपने कार्यक्रम में आमंत्रित किया जो एक स्वतंत्र विचार गोष्ठी थी। लेकिन उस गांधीवादी ने यह कहकर आने से मना कर दिया कि जिस मिटिंग में राम बहादुर राय उपस्थित रहेंगे उसमें हम लोग शामिल नहीं हो सकते हैं। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि गांधी विचारों के विपरीत गांधीवादी सिर्फ खादी और चश्मे को ही गांधी विचार मानते हैं। जबकि गांधी अपने कार्य से किसी अन्य के कार्य का विरोध करते थे, व्यक्ति का नहीं। आज के गांधीवादी व्यक्ति का विरोध करते हैं, अपने कार्य को तो समझते ही नहीं है। गांधीवादी संस्थानों पर आक्रमण की जो शुरुआत हुई है उसमें गांधीवादियों के व्यवहार की भी बहुत बड़ी भूमिका है।

गांधीवादी संस्थानों और सरकार के बीच जो टकराव दिख रहा है उसका कथानक बहुत पुराना है। जब गांधीवादी संगठन, सर्व सेवा संघ पर साम्यवादियों का नियंत्रण हुआ तब एक लोक स्वराज्य के नाम से पहल करने वाले लोगों ने लोक स्वराज अभियान की शुरुआत की। इसमें ठाकुर दास बंग, सिद्धराज जी ढड्ढा, प्रेम भाई, आर्य भूषण भारद्वाज, श्याम बहादुर नम्र तथा अन्य अनेक लोग शामिल थे। इस टीम के साथ कुसुमलता केडिया, नानाजी देशमुख, रायबहादुर राय तथा मैं भी जुड़ा हुआ था। इस तरह हम सब मिलकर एक लोक स्वराज्य के लिए नया अभियान शुरू करना चाहते थे। दूसरी ओर कुमार प्रशांत, रामचंद्र राही तथा कुछ अन्य ऐसे लोग थे जो इस अभियान के विरोध में थे। अमरनाथ भाई दोनों के बीच सुलह कराने के पक्षधर रहे। यह संघर्ष चरम पर पहुंचा जब 2002 में राजस्थान गंगानगर के सम्मेलन में इस बात पर बहस हुई कि क्या सर्व सेवा संघ को संस्थागत रूप से यह निर्देश देना चाहिए कि सारे लोग गुजरात में जाकर नरेंद्र मोदी का विरोध करें। लोक स्वराज्य की समर्थक टीम इस प्रस्ताव के विरोध में थी और इस बात की पक्षधर थी कि व्यक्तिगत रूप से लोग जाकर मोदी का विरोध या समर्थन कर सकते हैं, लेकिन संस्था कोई प्रस्ताव पारित न करें। दुर्भाग्य से वह प्रस्ताव कुमार प्रशांत के दबाव के सामने पारित हो गया और हम लोगों का लोक स्वराज्य गुट कुछ नहीं कर सका। तब मैंने 2003 में एक लेख लिखा उसका शीर्षक था गांधी, गांधीवाद और गांधीवादी यह लेख एक तरह से विस्फोटक सिद्ध हुआ और दोनों ही पक्षों के

बीच अप्रत्यक्ष रूप से टकराव शुरू हो गया। हम लोग किसी भी प्रकार की राजनीतिक दलों से संपर्क रखने के विरोध में थे और कम्युनिष्ट समय–समय पर राजनीतिक दलों के साथ संपर्क करना आवश्यक समझते थे। यह टकराव उस समय और आगे बढ़ा जब कम्युनिस्ट पार्टी ने मनमोहन सिंह से अपना समर्थन वापस ले लिया और सर्वोदय ने यह प्रस्ताव पारित किया कि हम सब लोग मनमोहन सिंह सरकार का खुला विरोध करेंगे। इस विरोध स्वरूप 15 दिनों की एक पद यात्रा निकाली गई जिसका नेतृत्व अमरनाथ भाई ने किया और दिल्ली में उस पदयात्रा का समापन हुआ। हम लोगों की लोक स्वराज समूह ने इस प्रकार की पदयात्रा का भी विरोध किया था और हम नहीं चाहते थे कि लोक स्वराज की लड़ाई राजनीतिक दलों के साथ टकराव का आधार बने।

सरकार और गांधीवादियों के बीच टकराव की शुरुआत 32 वर्ष पहले विचारक गांधीवादियों और मठी गांधीवादियों के बीच मतभेद से शुरू होती है। विचारक गांधीवादियों का नेतृत्व ठाकुरदास बंग, सिद्धराज ढढ्ढा, प्रेम भाई सरीखे लोग कर रहे थे और मठी गांधीवादियों का प्रतिनिधित्व कुमार प्रशांत, रामचंद्र राही कर रहे थे। 32 वर्ष पहले बंग जी नए लोगों की खोज में निकले और धीरे–धीरे मैं बजरंग मुनि, राम बहादुर राय, नानाजी देशमुख, कुसुमलता केडिया, शरद साधक आदि अनेक लोग इस विचारधारा से जुड़े। हम लोगों का प्रमुख कार्यालय रामानुजगंज बना। हमारा प्रमुख नारा था हमें सुराज नहीं स्वराज्य चाहिए। हम लोग स्वराज्य अभियान के नाम से जन जागरण शुरू कर रहे थे। ज्ञान तत्व हमारी पाक्षिक पत्रिका थी। मठी गांधीवादियों ने इस अभियान को एक बड़े चुनौती के रूप में स्वीकार किया। 3 वर्ष बाद ही हमारे आश्रम पर सरकार के द्वारा गंभीर आक्रमण कराया गया। इस गुट ने मुझे नक्सलवादी घोषित कराया और 30 मार्च 1996 को गोली मारने का प्रयत्न हुआ। मेरी जान बचाने में सबसे आगे अमरनाथ भाई खड़े थे जो आज भी जीवित हैं। दुर्गा प्रसाद आर्य भी बिल्कुल आगे थे। राम जी सिंह भी सारी घटना के प्रत्यक्षे गवाह हैं। बंग जी, सिद्धराज जी, कृष्णराज मेहता, इंद्र लाल मिश्र आदि अनेक गांधीवादियो ने आगे आकर मुझे सुरक्षा दी। मुझे जबलपुर उच्च न्यायालय ने पूरी तरह निर्दोष घोषित कर दिया। हम विचारक गांधीवादियों के नेतृत्व में मध्य मार्ग पर चलना चाहते थे। जिनमें लोक स्वराज्य सबसे ऊपर होगा किसी भी रूप में और किसी भी व्यक्ति से नफरत नहीं की जाएगी भले ही उसका भूतकाल सावरकरवादी क्यों न रहा हो। आप विचार करिए कि मुझे नक्सलवादी घोषित करने के समर्थक गांधीवादी कैसे हो सकते हैं लेकिन इन लोगों ने वह सब किया जो गांधी कभी सोच भी नहीं सकते थे। हम लोगों के समूह की गतिविधियां बढ़ती गई और विचारक गांधीवादियो ने मिलकर लोक स्वराज्य का एक राष्ट्रीय संविधान का प्रारूप बनाया। इस प्रारूप से मठी गांधीवादी जल–भुन गये। सन 2000 में हम लोगों के समूह ने मिलकर रामानुजगंज शहर की नगर पालिका में लोक स्वराज्य संविधान का सफल प्रयोग किया। ये प्रयोग एक आदर्श बना। इसी बीच हम लोगों के साथ राम बहादुर राय और गोविंदाचार्य जी का भी जुड़ाव होता है और हम विचारक गांधीवादियों की सामाजिक ताकत मठी

गांधीवादियों की तुलना में बहुत अधिक हो जाती है। उस कालखंड में अमरनाथ भाई, डॉक्टर रामजी सिंह, महावीर त्यागी, आर्य भूषण भारद्वाज हम लोगों के प्रयोग में पूरी तरह सम्मिलित थे।

हम लोगों का ग्रुप सर्वोदय और संघ के अच्छे लोगों को एक साथ बिठाकर लोक स्वराज की दिशा में कुछ नया करना चाहता था। सर्वोदय के लोग भी हम लोगों के साथ जुड़े थे और संघ के लोग भी जुड़े थे लेकिन यह एकता साम्यवादियों और सावरकरवादियों को पसंद नहीं आयी। ऐसे ही समय में हमारे प्रयत्नों में शामिल राम बहादुर राय का एक लेख जनसत्ता में प्रकाशित हुआ। इस लेख से विघ्न संतोषियों को बहुत कष्ट हो रहा था। ऐसे ही समय में मैंने गांधी, गांधीवाद और गांधीवादी नामक एक लेख लिख दिया। इस लेख के बाद मठी गांधीवादियों का धैर्य टूट गया। मेरे ऊपर आक्रमण करके वे लोग निराश हो चुके थे इसलिए उन्होंने रणनीति बदली और सर्वोदय के तत्कालीन अध्यक्ष अमरनाथ भाई को किसी तरह हमसे अलग करने में सफल हो गए। अमरनाथ भाई को जोड़कर इन लोगों ने बंग साहब को परेशान करना शुरू किया। यहां तक की सेवाग्राम में लोक स्वराज पर चर्चा करने से बंग साहब को रोक दिया गया। बंग साहब को अपनी अगली मीटिंग सेवाग्राम आश्रम के बाहर करनी पड़ी और अमरनाथ भाई सहित कई लोगों ने उस मीटिंग में आने वाले को प्रत्यक्ष रोकने की कोशिश की। उस समय के आश्रम के सचिव हमारे मीटिंग के गेट पर खड़े होकर प्रमुख गांधीवादियों को अंदर जाने से रोक रहे थे। उसके बाद तो हर कार्यक्रम में कुमार प्रशांत और रही जी ने अमरनाथ भाई को आगे करके हमारे समूह को कमजोर करने की निरंतर कोशिश की और वे सफल होते गए। एक तरफ हम लोग अपने संघ समर्पित मित्रों के माध्यम से सावरकरवादियों के विचारों में बदलाव करने में सफल हो रहे थे तो दूसरी ओर गांधीवादियों के बीच हमारे प्रयत्न कमजोर हो रहे थे। एक तरफ अपनी मृत्यु के पूर्व निराश होकर बंग साहब ने बेंगलुरू के सिद्धार्थ शर्मा को यह दायित्व सौपा कि वे उनके मिशन को भविष्य में आगे बढ़ाएंगे। दूसरी ओर हम लोग नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत को लोक स्वराज से लेकर धर्मनिरपेक्षता तक समझने में सफल हो रहे थे। ऐसी विकट परिस्थिति में हम लोग सर्वोदय और संघ के अच्छे लोगों को एक साथ जोड़ने में सफल नहीं हो सके। संघ तो सावरकरवादियों से लगभग मुक्त हो गया लेकिन सर्वोदय कट्टरवादियों के हाथ में पूरी तरह चला गया। इस बात का दुख अंत तक ठाकुरदास जी बंग को भी बना रहा और मैं भी इस असफलता से दुखी हूँ।

2–दुनिया की चार प्रमुख समस्याएँ :

दुनिया में सैकड़ों समस्याएं हैं, लेकिन उनमें से अगर प्रमुख समस्याओं का वर्गीकरण किया जाए तो इन सारी समस्याओं को जोड़कर प्रमुख रूप से चार वर्ग ही बनते हैं, अर्थात् इन्हें चार भागों में बांटा जा सकता है–

1) व्यक्ति के स्वभाव में बदलाव,

2) आर्थिक वातावरण में परिवर्तन और समाधान,

3) राजनीतिक वातावरण में बदलाव और समाधान

4) सामाजिक समस्याओं में बदलाव और समाधान।

सारी दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति में स्वार्थ और आक्रोश या उद्दंडता लगातार बढ़ती जा रही है। इस स्वार्थ और आक्रोश बढ़ने के परिणामस्वरुप अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं। जालसाजी, धोखाधड़ी, चोरी, डकैती, हिंसा आदि का विस्तार इसका ही बाय–प्रोडक्ट हैं। इसके प्रमुख कारण और समाधान पर चर्चा प्रायः नहीं होती है। इन समस्याओं के बढ़ने का मूल कारण है – व्यक्तिगत संपत्ति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का असीम अधिकार। जब तक संपत्ति और स्वतंत्रता को कुछ सीमा तक स्वनियंत्रित नहीं किया जाएगा तब तक इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। मैं समाधान के रूप में यह बताना चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति को कानून के द्वारा बाध्य कर दिया जाए कि वह परिवार का सदस्य होगा ही और परिवार से जुड़ते ही उसकी सारी संपत्ति और स्वतंत्रता संयुक्त हो जाएगी। यह एक बहुत छोटा–सा बदलाव दिखता है, लेकिन इस बदलाव के दूरगामी और विश्वव्यापी प्रभाव निश्चित है। मेरे विचार से दुनिया को संयुक्त संपत्ति और संयुक्त उत्तरदायित्व के सिद्धांत पर गंभीर विचार करना चाहिए।

सारी दुनिया में और विशेषकर भारत में भी दो प्रकार की आर्थिक समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। पहली है आर्थिक असमानता का लगातार बढ़ते जाना और दूसरी है श्रम और बुद्धि के बीच में लगातार बढ़ता अंतर। दुनिया की पूरी राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था पर पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों का एकाधिकार है। दोनों ने एक जुट होकर श्रम शोषण की योजनाएं बनाई। भारत में वर्ण और जाति व्यवस्था को कर्म से हटाकर जन्म के आधार पर किया गया तो दुनिया के अन्य पश्चिमी देशों ने श्रम शोषण के उद्देश्य से कृत्रिम उर्जा का आविष्कार कर लिया। दोनों का ही उद्देश्य श्रम शोषण था। वर्तमान समय में भारत में भी श्रम शोषण के लिए सस्ती कृत्रिम उर्जा का मार्ग अपनाया जा रहा है। वैसे समाज में तो अभी भी जन्म के अनुसार जाति और वर्ण की व्यवस्था प्रचलित है, लेकिन धीरे–धीरे श्रम शोषण के लिए सस्ती कृत्रिम उर्जा को ही ज्यादा उपयोगी माना जा रहा है। पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों का यह मिला–जुला षड्यंत्र पूरी दुनिया में देखने को मिल रहा है जिसके दुष्परिणाम भी अब दिख रहे हैं। श्रमजीवियों का जीवन स्तर चींटी की चाल से सुधार रहा है तो बुद्धिजीवियों और पूंजीपतियों का हवाई जहाज की रफ्तार से। इस पूरी आर्थिक समस्या का सिर्फ एक ही समाधान है कि कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्य वृद्धि कर दी जाए। लेकिन दुनिया के तमाम राजनेता समाज में यह भ्रम फैला कर रखना चाहते हैं कि महंगाई, बेरोजगारी तथा अन्य अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याएं व्याप्त हैं, जबकि ऐसी कोई समस्या समाज में नहीं है।मेरा सुझाव है कि श्रम के साथ न्यायसंगत तरीके से समाधान होना चाहिए और पूरी दुनिया में कृत्रिम उर्जा का

मूल्य बहुत तेजी से बढ़ा दिया जाना चाहिए। इससे दुनिया की सभी आर्थिक समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

दुनिया में तानाशाही सबसे बड़ी राजनीतिक समस्या माना जाता है। दुनिया लंबे समय से तानाशाही से बचाव के तरीके खोज रही है, लेकिन अब तक दुनिया में ऐसा कोई सफल तरीका नहीं मिल सका है। लोकतंत्र के नाम से पूरी दुनिया में एक प्रयोग शुरू हुआ और तानाशाही के विकल्प के रूप में कई जगह स्थापित भी हुआ। लेकिन लंबे समय बाद लोकतंत्र का परिणाम अव्यवस्था के रूप में आया। दुनिया इस बात को अभी तक स्वीकार नहीं कर पा रही है कि तानाशाही का एकमात्र समाधान लोकतंत्र है। गांधी ने पहली बार यह बताया कि लोकतंत्र तानाशाही का एक अल्पकालिक विकल्प है, समाधान नहीं है। तानाशाही का समाधान तो लोक स्वराज्य ही हो सकता है। लेकिन अब तक दुनिया में कहीं भी लोक स्वराज का प्रयोग शुरू नहीं हुआ है। विनोबा, जयप्रकाश और अन्ना हजारे ने इस दिशा में बढ़ने का प्रयास किया था, लेकिन कुटिल राजनीति ने इन सबके प्रयासों को असफल कर दिया। मैं आज भी मानता हूँ कि यदि तानाशाही और लोकतंत्र में से किसी एक को चुनने की हमारी मजबूरी होगी तो हम लोकतंत्र को ही प्राथमिकता देंगे, लेकिन हम लोकतंत्र को समाधान नहीं मानेंगे। लोकतांत्रिक व्यवस्था को नकारकर हम तानाशाही का खतरा भी तो पालकर नहीं रख सकते हैं। इसलिए अब समय आ गया है कि भारत लोकतंत्र की जगह लोक स्वराज्य को स्वीकार करे और दुनिया को यह संदेश दे कि ''सभी समस्याओं का स्थाई समाधान लोक स्वराज्य में है''।

समाज में ऊंच–नीच, छुआछूत, घृणा तथा वैमनस्य का वातावरण बढ़ रहा है। जो लोग सक्षम हैं, आर्थिक दृष्टि से मजबूत हैं, उच्च जाति के हैं, पुरुष हैं, वह कमजोरों के साथ न्याय करने के लिए तैयार नहीं है। दूसरी ओर जो लोग शोषित वर्ग से हैं या महिला हैं वह मजबूतों की दया पर निर्भर न रहकर उनके साथ टकराने के लिए तैयार हैं। मजबूतों को ऐसा महसूस होता है कि यदि हम कमजोरों की मदद करेंगे, तो यह कमजोर अधिक शक्तिशाली होकर हम से जरुर टकराएंगे क्योंकि कमजोर लोग हमारी मदद के लिए एहसान मानने को तैयार नहीं है। दूसरी ओर कमजोर यह मानकर चल रहे हैं कि मजबूत लोग हमारा उसी तरह शोषण करने लगेंगे, जैसा पुराने समय से करते आ रहे हैं। सरकारें कमजोरों को अधिक से अधिक अधिकार देकर उन्हें मजबूत करना चाहती है, जिसे कमजोर और मजबूत के बीच टकराव बढ़े और सरकार बिचौलिया बनकर अपने को सुरक्षित कर लें। मेरे विचार में राज्य की इस नीति के दुष्परिणाम ही मणिपुर में भी दिख रहे हैं तथा धीरे–धीरे पूरी दुनिया में दिखेंगे। अमेरिका में भी ऐसा टकराव लगातार बढ़ रहा है।

इसके समाधान के रूप में मेरा यह सुझाव है कि सरकार कमजोरों को कोई भी अधिकार

अलग से न दे। सरकार प्रत्येक व्यक्ति को एक इकाई माने और लोगों के आपसी व्यवहार में सरकार कोई कानूनी दखल ना दें। सरकार वर्गों की मान्यता समाप्त कर दे। मैं तो लंबे समय सेसमान नागरिक संहिता की बात करता रहा हूँ। जिसका अर्थ यह है कि सरकार कोई नागरिक संहिता ना बनावे, बल्कि नागरिकों को स्वतंत्रता पूर्वक अपनी संहिता बनाने और मानने की छूट दे दे। फिर भी अगर सरकार आम लोगों की सहमति से कोई नागरिक संहिता बनाती है तो वह प्रत्येक नागरिक पर समान रूप से लागू हो। कोई जाति, धर्म, लिंग, गरीब–अमीर का भेद ना किया जाए। मणिपुर का टकराव उसी दिन समाप्त हो जाएगा जब सरकार मजबूत और कमजोरों के बीच में बिचौलिया बनकर नहीं घुसेगी और वहां कॉमन सिविल कोड लागू हो जाएगा। मेरे विचार से दुनिया की सभी सामाजिक समस्याओं का समाधान कॉमन सिविल कोड में निहित है।

3– सर्वोदय और सरकार के बीच के टकराव :

मेरा शुरू से ही विश्वास रहा है कि सर्वोदय को सत्ता की राजनीति से दूरी बनाकर रखनी चाहिए। सर्वोदय ने यह गंभीर भूल की कि वह समय–समय पर राजनीतिक सत्ता के पक्ष विपक्ष में जुड़ता गया। सबसे बड़ी गलती तो विनोबा भावे से हुई कि उन्होंने नेहरू परिवार के मोह में पड़कर जेपी आंदोलन का विरोध किया। यदि विनोबा जी जयप्रकाश आंदोलन से जुड़ जाते तो जयप्रकाश जी की यह मजबूरी नहीं होती कि वह राजनीतिक दलों की दया पर निर्भर हो जाते। वहीं से सर्वोदय में टकराव शुरू हुआ। बिनोवा और जयप्रकाश के मरने के बाद ठाकुरदास बंग ने कमान संभाली थी कि हम लोग स्वराज्य की दिशा में आगे बढ़ेंगे लेकिन सत्ता प्रेमी लोग कभी भी एक स्वतंत्र आंदोलन के पक्ष में नहीं रहे। आज परिणाम दिख रहा है कि किसी निश्चित विचारधारा के अभाव में सर्वोदय कुछ रिटायर्ड अथवा संपत्ति के लालची लोगों तक सिमट गया है। आज सर्वोदय में लोक सेवकों की कोई इज्जत नहीं है। चरित्र और आचरण को किनारे करके पढ़े–लिखे तिकड़मबाज तथा संघर्षशील लोग आगे आ रहे हैं। आंदोलन और संघर्ष करना हमारा लक्ष्य नहीं है, मार्ग हो सकता है। दुर्भाग्य से N.A.P.M. जैसी संस्थाएं बन रही हैं, जिनका उद्देश्य किसी विचारधारा से प्रभावित नहीं है। सर्वोदय लोक सेवकों के अभाव में युद्ध का अखाड़ा बन रहा है। यहां तक कि अब तो पदाधिकारी के चुनाव भी टकराव से प्रभावित हो रहे हैं। क्या कोई ऐसा लोक सेवक नहीं है जो सर्वोदय विचार के लोगों को एक साथ बिठाकर लोक स्वराज की दिशा में प्रेरित कर सके। आज की सर्वोदय की प्रमुख आवश्यकता यह है कि कोई एक निष्पक्ष व्यक्ति आगे आवे। उसका किसी राजनीतिक दल से सीधा जुड़ाव या टकराव न हो तथा उसके स्वतंत्र प्रयत्नों से सर्वोदय को बचाने में मदद मिल सके। सर्वोदय को साम्यवाद से भी बचाने की जरूरत है और सावरकरवाद से भी। सर्वोदय को गांधी मार्ग को आधार बनाकर लोक स्वराज की लड़ाई शुरू करनी चाहिए। मेरे विचार में आचार्य पंकज, राम जी सिंह, राज्यपाल मिश्रा, ओमप्रकाश दुबे, एम एच पाटिल तथा धर्मेंद्र भाई राजपूत सरीखे लोग एक

बार अलग से बैठकर इस टकराव पर विचार करें। प्रश्न वाराणसी सर्वोदय भवन का नहीं है बल्कि सर्वोदय संगठन और सरकार के बीच हो रहा टकराव हम सबके लिए चिंता का विषय है।

भारत में दो गुटों के बीच लगातार ध्रुवीकरण हो रहा है। इसमें एक का नेतृत्व साम्यवादियों के हाथ में है और दूसरे का नेतृत्व सावरकरवादियों के हाथ में। साम्यवादी गुट लगातार सावरकर को गाली देने में सक्रिय रहता है तो सावरकरवादियों का गुट दिन–रात गांधी को गाली देता रहता है। दोनों के बीच मध्य मार्ग अपनाने वाले अभी कमजोर पड़ रहे हैं। साम्यवादियों का गुट गांधीवादियों पर पूरी तरह पकड़ बनाए हुए हैं तो सावरकरवादियों का गुट संघ परिवार पर फिर से हावी होने के लिए प्रयत्नशील है। यह बात स्पष्ट है कि यह टकराव सिर्फ वाराणसी भवन तक केंद्रित नहीं है, बल्कि एक दूसरे को समाप्त करने तक सक्रिय है। इस लड़ाई में गलती गांधीवादियों की है जिन्होंने साम्यवादियों के प्रभाव में आकर हमेशा राजनीतिक सत्ता से टकराव मोल लिया। लेकिन यह बात भी दुनिया जानती है कि सिर्फ गांधी विचार ही लोक स्वराज्य को आगे बढ़ा सकता है। स्पष्ट है कि गांधी विचार और उसके स्रोत पर कोई भी निर्णायक चोट उचित नहीं है। अभी टकराव के मार्ग पर जो भी सरकारी कार्यवाही हो रही है वह गांधी विचारकों के भी अस्तित्व को चोट पहुंचायेगी क्योंकि अगर गांधी विचार कमजोर होगा तो भविष्य में कभी न जयप्रकाश सामने आ सकेंगे न अन्ना हजारे। लोक स्वराज की संभावनाएं गांधी संस्थाओं के माध्यम से ही आगे बढ़ सकती है, कोई अन्य आधार नहीं है। नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत इस बात को अच्छी तरह समझते हैं लेकिन गांधीवादियों की मूर्खता के कारण सावरकरवादी अपनी योजना में सफल होते जा रहे हैं। इन मूर्ख गांधीवादियों को तो जनता स्वयं ही कमजोर कर रही है। लेकिन यदि जड़ पर चोट हुई तो कभी भी नया पौधा नहीं निकल सकेगा। मोदी जी और भागवत जी को बीच का रास्ता निकालना चाहिए। गोविंदाचार्य जी भी इस बीच के मार्ग में सहायक हो सकते हैं। राम धीरज जी भी एक सुलझे हुए गांधीवादी हैं और राम बहादुर राय भी उतने ही अधिक परिपक्व हैं। यदि गोविंदाचार्य जी को इस मामले में आगे बढ़ाकर तीन लोगों की एक कमेटी बना दी जाए जिसमें राम बहादुर राय और राम धीरज जी भी शामिल हैं तो साम्यवादियों से भी सर्वोदय धीरे–धीरे मुक्त हो सकता है और सावरकरवादियों की योजना भी असफल हो सकती है। सर्वोदय को मानने वाले मध्यस्थों को भी इस दिशा में गंभीरता से विचार करना चाहिए क्योंकि सावरकरवादियों और साम्यवादियों की भैंसा लड़ाई में गांधी विचार का नुकसान होना बहुत घातक होगा। इस संबंध में गांधीवादियों से भी मेरा निवेदन है कि वह साम्यवादियों के प्रभाव में आकर यदि हिंदुत्व को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे तो इतिहास आपको कभी माफ नहीं करेगा।

4– नरेंद्र मोदी सत्ता का केन्द्रीयकरण कर रहे हैं – विपक्ष :

मुझे नरेंद्र मोदी का पक्षधर माना जाता है और मैं वैसा हूँ भी। नरेंद्र मोदी पूरी तरह उस लाइन पर चल रहे हैं जो मैं सोचता और लिखता आ रहा हूँ। मैं चाहता था कि गांधी और सावरकर के बीच में विवाद पैदा करके दुकानदारी करने वाले गांधीवादियों और सावरकरवादियों को किनारे कर दिया जाए, अल्पसंख्यक तुष्टीकरण को समाप्त करके हिंदुओं को भी समानता का अधिकार दिया जाए। अपराधियों पर लगाम लगाने के लिए नरेंद्र मोदी अधिकाधिक शक्तिशाली हो तथा अन्य मामले अपने मंत्रिमंडल के साथियों पर छोड़ दें। अब तक मैं संतुष्ट हूँ कि इन सब मामलों में नरेंद्र मोदी लगातार ठीक दिशा में बढ़ रहे हैं और विपक्ष लगातार गलत दिशा में जा रहा है। जब धारा 370 समाप्त हुई तब विपक्षी दलों को कष्ट हुआ था। समान नागरिक संहिता लागू करके हिंदुओं को भी बराबरी का अधिकार देने की कोशिश हुई है और हो भी रही है, तब भी विपक्षी दलों को कष्ट हो रहा है। यदि नरेंद्र मोदी भ्रष्टाचार और अपराध रोकने के लिए शक्ति केंद्रीत कर रहे हैं तब भी विपक्ष को कष्ट हो रहा है। दूसरी ओर नरेंद्र मोदी क्षेत्रीय मामले गृह मंत्री अमित शाह या अन्य मंत्रियों पर छोड़ रहे हैं तब भी विपक्ष को कष्ट हो रहा है। विपक्षी दल दो विपरीत प्रश्न एक साथ मोदी से कर रहे हैं। पहला कि नरेंद्र मोदी लगातार अपने पास सत्ता का केंद्रीयकरण कर रहे हैं और नरेंद्र मोदी तानाशाह बनते जा रहे हैं और दूसरा यदि मणिपुर में कोई सांप्रदायिक दंगा हुआ है तो मोदी को संसद में उत्तर देना चाहिए। यदि कहीं बलात्कार हो जाए तो विपक्ष उसके लिए नरेंद्र मोदी को ही उत्तरदाई मानते हैं। यह दोनों बिल्कुल विपरीत बातें हैं। नरेंद्र मोदी ने यदि मणिपुर में स्वयं कोई हस्तक्षेप न करके गृह मंत्री को सक्रिय होने दिया तो इसमें गलत क्या है?

मैं आज तक नहीं समझ सका कि मैं नरेंद्र मोदी का खुलकर समर्थन क्यों ना करूं? जो भी मित्र विपक्षी दलों का समर्थन कर रहे हैं उन्हें इस बात का जवाब अवश्य देना चाहिए।

5–कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के वैचारिक सोच में अन्तर :

कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के वैचारिक सोच में भी जमीन आसमान का फर्क है। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस पार्टी ने लगातार प्रयत्न किया कि अधिक से अधिक लोगों को सरकारी नौकरियां दी जाएं। उन लोगों की जुबान बंद रखी जाए, उन्हें अधिक से अधिक सुविधाएं दी जाएं। सामान्य लोगों का जीवन स्तर और इन सरकारी नौकरों के जीवन स्तर में जमीन आसमान का फर्क किया गया जितने अधिक सरकारी नौकर होंगे उतने अधिक सरकार के गुलाम पैदा होंगे यह कोशिश लगातार चलती रही। मैं व्यक्तिगत रूप से शुरू से ही इस नीति का विरोधी रहा और मैं यह चाहता था कि सरकारी नौकरियां कम से कम होनी चाहिए। उन्हें बाजार से अधिक सुविधा भी देने की जरूरत नहीं है सरकारी नौकरियां आकर्षण का केंद्र नहीं होनी चाहिए। लेकिन कांग्रेस पार्टी अपनी नीति पर चलती रही। अब नरेंद्र मोदी अपनी नीति बदल रहे हैं, वे निजीकरण कर रहे हैं

लोगों को स्वतंत्रतापूर्वक बोलने की छूट है। लोग कंपटीशन कर सकते हैं। लोगों को सामान्य लोगों की तुलना में अधिक सुविधाएं नहीं दी जा रही हैं तो कांग्रेस पार्टी को बहुत तकलीफ हो रही है। आज कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने यह बयान दिया है कि कांग्रेस नौकरिया दे रही थी और मोदी सरकार निजीकरण करके नौकरियां छीन रही है। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि मैं कांग्रेस पार्टी का विरोध क्यों ना करूं।

6–सांप्रदायिकता किसी भी परिस्थिति में घातक होती है :

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि सांप्रदायिकता को कभी संतुष्ट नहीं किया जा सकता सिर्फ कुचलना ही एकमात्र मार्ग है। दुनिया मुस्लिम सांप्रदायिकता से परेशान है लेकिन भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि भारत इस समस्या के समाधान की शुरुआत कर सकता है। यह बात साफ है कि मुस्लिम सांप्रदायिकता को जितना ही संतुष्ट करने का प्रयास किया गया उसकी ताकत लगातार बढ़ती चली गई,और टकराव अधिक घनीभूत होता गया। इसलिए अब उसे कुचलने की बारी है लेकिन इसके समाधान में हिंदू सांप्रदायिकता मजबूत न हो जाए इस बात की भी सावधानी रखनी पड़ेगी। हमें सांप्रदायिक हिंदुओं से इस टकराव में पूरी मदद लेनी चाहिए लेकिन सांप्रदायिक हिंदुत्व के नेतृत्व में मुस्लिम सांप्रदायिकता को मिटाना खतरनाक होगा, क्योंकि सांप्रदायिकता घातक होती है हिंदू तथा मुस्लिम धार्मिक भावना नहीं। मेरे विचार से वर्तमान भारत सरकार बिल्कुल ठीक दिशा में कार्य कर रही है हम सब हिंदू मुसलमान एकजुट होकर सरकार का समर्थन करें क्योंकि सांप्रदायिकता से बचना वर्तमान भारत की सबसे पहली आवश्यकता है।

7– वर्तमान समय में संविधान में व्यापक बदलाव के लिए जन जागरण तक सीमित रहना ठीक :

भारत के आर्थिक सलाहकार परिषद के प्रमुख विवेक देवराय जी ने संविधान में व्यापक बदलाव के लिए एक संविधान सभा के गठन का सुझाव दिया है। विवेक देवराय जी के अनुसार संविधान के प्रियंबुल सहित अन्य अनेक स्थानों पर बदलाव की चर्चा होनी चाहिए। इस सुझाव पर व्यापक बहस शुरू हुई है। मैं भी लगातार इस सुझाव का समर्थक रहा हूँ लेकिन पिछले कुछ वर्षों से मुझे यह सुझाव उचित होते हुए भी अव्यवहारिक दिख रहा है।

मेरे विचार से वर्तमान समय में संविधान में व्यापक बदलाव पर जन जागरण तक सीमित रहना चाहिए। एक संविधान सभा अवश्य बननी चाहिए जो वर्तमान तंत्र के संविधान संशोधन संबंधी असीम अधिकारों में हिस्सेदारी कर सके। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी भी संविधान संशोधन के लिए संविधान सभा की भी स्वीकृति आवश्यक होगी। यदि वर्तमान तंत्र और संविधान सभा किसी संशोधन पर अंतिम रूप से असहमत हो, तब उक्त संशोधन के लिए जनमत संग्रह आवश्यक हो। सैद्धांतिक रूप से भी जब तंत्र संविधान के अंतर्गत कार्य करता है तब तंत्र

अकेला संविधान में संशोधन कैसे कर सकता है। सैद्धांतिक रूप से तंत्र आम जनता का कस्टोडियन नहीं बल्किमैनेजर मात्र होता है। यद्यपि देवराज जी का विचार सामाजिक बहस के लिए तो उपयुक्त है तथपि उसे किसी प्रस्ताव के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करना उचित नहीं प्रतीत होता है। विशेष रूप से तब जब उक्त प्रस्तावक किसी जिम्मेदार पद पर स्थापित हो इसलिए जिम्मेदार लोगों को ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा करने से बचना चाहिए। इस बात के होते हुए भी मैं इस बात का पक्षधर हूँ कि समाज में वर्तमान भारतीय संविधान के गुण दोषो में व्यापक चर्चा जारी रहनी चाहिए।

8–मोदी के कार्यकाल और पिछले 70 वर्षों के कार्यकाल की तुलना :

नरेंद्र मोदी ने अगले चुनाव के लिए भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण को प्रमुख समस्या के रूप में घोषित किया है। यदि हम मोदी के कार्यकाल और पिछले 70 वर्षों के कार्यकाल को देखे तो पिछले 70 वर्षों में ये तीनों समस्या लगातार बढ़ती गई है। पूरी की पूरी राजनीति इन तीनों समस्याओं से ग्रस्त रही है। प्रधानमंत्री भी लाल बहादुर शास्त्री, नरसिंह राव और मनमोहन सिंह को छोड़कर सभी इस समस्या में सहयोग देते रहे। तीनों समस्याओं से भारत की पूरी राजनीति ही गंदी हो गई है। नरेंद्र मोदी के आने के बाद सिर्फ एक बदलाव दिख रहा है कि भारत का प्रधानमंत्री इन तीनों समस्याओं से मुक्त है। भारतीय जनता पार्टी में भी परिवारवाद और भ्रष्टाचार लगभग उसी तरह व्याप्त है जिस तरह पिछली सरकारों में था। तुष्टिकरण में भी सिर्फ इतना ही बदलाव दिख रहा है कि मुस्लिम तुष्टिकरण की जगह हिंदू तुष्टिकरण की संभावना बनने लगी है। मैं मानता हूँ कि वर्तमान राजनैतिक वातावरण भी इन समस्याओं से मुक्त नहीं है, लेकिन यह प्रश्न अवश्य सामने दिखता है कि नरेंद्र मोदी को हटाकर फिर से विपक्षी सरकारों को मजबूत करने का क्या औचित्य है? आज तक कोई भी विपक्षी दल यह बात नहीं बता पा रहा है कि उसके पास इन तीनों समस्याओं के समाधान की क्या योजना है। नरेंद्र मोदी इस संबंध में एक योजना प्रस्तुत कर रहे हैं जिसके अनुसार निजीकरण, राजनीति में उम्र का बंधन और समान नागरिक संहिता इन तीनों समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकती है। सभी विपक्षी दल इन तीनों घोषणाओं का विरोध करते हैं और अपनी तरफ से इन तीनों समस्याओं का कोई समाधान नहीं बताते। भारत की जनता विपक्षी दलों को क्या सोचकर वोट दे?

9– पेशेवर गांधीवादी कभी भी नहीं चाहेंगे कि लोक स्वराज्य की आवाज बुलंद हो :

मैंने अपने जीवन के 85वर्षों में से 72वर्ष सक्रिय चिंतन मंथन और प्रयोग में बिताए हैं पिछले दो–तीन वर्षों से मैं पूरी तरह मुक्त होकर सिर्फ विचार मंथन ही करता हूँ। मेरा अपना यह अनुभव है कि संघ के पास प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं का एक संगठन है एक फौज है जो निरंतर दिन–रात सक्रिय है। गांधीवादियों के पास केवल एक 'विचार' है, कार्यकर्ता नहीं, संगठन नहीं, कार्यकर्ताओं की फौज नहीं। जब तक विचार को कोई प्रतिबद्ध समूह आगे नहीं बढ़ाता तब तक

विचार आगे नहीं बढ़ते। मैंने अपने जीवन में यह पूरी कोशिश की कि संघ और सर्वोदय के लोग अब एक साथ मिलकर लोक स्वराज की दिशा में सक्रिय हों लेकिन ऋषिकेश से लौटने के बाद मैं निराश हुआ। संघ के लोग समझने को तैयार हुए लेकिन गांधीवादी लोग इस बात को बिल्कुल समझने के लिए तैयार नहीं हुए कि लोकस्वराज्य की दिशा में सभी अच्छे लोग मिलकर आगे बढ़े। मैंने वह प्रयत्न अब छोड़ दिया है लेकिन मैं निराश नहीं हूँ क्योंकि संघ और गांधीवादी इन दोनों की एकता का जो मैंने बीज बोया था वह बीज अब एक पेड़ के रूप में आगे बढ़ रहा है। अब लोक स्वराज्य के लिए दो ही जगह से उम्मीद दिखती है एक नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत इस दिशा में आगे बढ़े और दूसरा की गांधीवादियों के बीच में कोई सिद्धार्थ शर्मा, राजपाल मिश्र या कोई अन्य ऐसा व्यक्ति आगे आवे जो लोक स्वराज को लेकर आगे बढ़े। पेशेवर गांधीवादी कभी भी नहीं चाहेंगे कि लोक स्वराज्य की आवाज बुलंद हो क्योंकि लोक स्वराज की आवाज बुलंद होते ही उनका गांधी के नाम पर संपत्ति और दुकानदारी का सपना चूर हो जाएगा। मैं इस कठिनाई को अच्छी तरह समझता हूँ लेकिन लोक स्वराज के लिए मैं पूरी तरह निराश नहीं हूँ। मुझे उम्मीद है कि हम लोगों ने जो मिलकर बीज बोया है भविष्य में वह फल देगा लोक स्वराज सफल होगा। नरेंद्र मोदी मोहन भागवत और गांधी के विचार एक साथ मिलकर लोक स्वराज का फल तैयार करेंगे और जो फल तैयार होगा वह दुनिया में लोक स्वराज को आगे बढ़ाएगा। मेरी हार्दिक इच्छा है कि गांधीवादी संपत्ति की लड़ाई छोड़ लोक स्वराज की लड़ाई शुरू करें। यदि लोक स्वराज की लड़ाई शुरू कर देंगे तो सारी संपत्ति अपने आप बच जाएगी। यदि सारी संपत्ति भी बच गई और लोक स्वराज्य शुरू नहीं हुआ तो ऐसी संपत्ति मरघट के समान ही मानी जाएगी।

बजरंग मुनि को जैसा मैंने जाना :

एक विचारक की जीवन यात्रा

नरेन्द्र सिंह

विचार नेतृत्व करने का सबसे अच्छा जरिया है। व्यक्ति के बुद्धि–कोष में इनकी उत्पत्ति का कारण केवल इसकी योग्यता ही नहीं होती बल्कि इसके सामने प्रस्तुत वातावरण भी इनकी उत्पत्ति और अन्वेशण का कारण होता है। यह कहावत है कि मुश्किल परस्थिति मजबूत आदमी बनाती है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि कुछ लोग निजी जीवन के दायरे में ही सिमट कर रह जाते हैं और कुछ पूरे समाज के विवृत्त पर अपनी दृश्टि डालते हैं। जो लोग समाज के विवृत्त को अपना कार्य क्षेत्र मानते हैं और इसकी उलझनों को सुलझाने के दृश्टिकोण इसके सामने प्रस्तुत करते हैं, वस्तुतः ऐसे लोग ही समाजविज्ञानी कहलाते हैं। मैंने श्री बजरंग मुनि के व्यक्तित्व में यह गुण भली–भांती पाया है। मुनि जी ने समाज की स्थापित रूढ एवं असामयिक व्यवस्था के दोषों को समझा और इसे यथार्थ के अनुसार उपयुक्त बनाने के अनेक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये। इनके चिन्तन

में मौलिकता का भरपूर पुट है। इनका जन्म 25 दिसंबर 1939 को छत्तीसगढ़ राज्य के रामानुजगंज शहर में हुआ। इनके पिता का नाम सेठ घुडामल अग्रवाल है। अपने चार भाई और दो बहनों में इनका दूसरा क्रम है। इनकी नियमित शिक्षा मैट्रिक तक हुई। छः माह तक कॉलेज भी गये लेकिन आगे की पढ़ाई में इनकी रूचि नहीं थी इसलिए कॉलेज से लौट आए। सक्रिय राजनीति, समाज सेवा तथा दुकानदारी के काम ने इनके अनुभव को बढ़ाया। 1947 में जब देश आजाद हुआ तब बजरंग मुनि महज 8 साल के थे। उस छोटी उम्र में ही इन्हें मानव जीवन के महत्व का एहसास हो चुका था। संयुक्त परिवार में इनकी दादी का इनके बाल मन पर सबसे अधिक प्रभाव था। उस काल में समाज में ओझा लोगों का बहुत प्रभाव था। इनके परिवार में भी ओझा आते ही रहते थे। महज 8–9 साल की उम्र में ही इन्होंने ओझा को अपने घर से खदेड़ दिया और फिर नहीं आने के लिए कह दिया। लेकिन इनके मन में भी भूत प्रेत के होने की आशंका घुसी हुई थी। इस कारण से इन्होंने अपना पहला शोध भूत–प्रेत पर ही किया और परिणाम स्परूप यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि प्रकृति के अनसुलझे रहस्यों को भूत कहते हैं तथा सुलझे हुए रहस्य विज्ञान कहलाते हैं। उस पारम्परिक परिवेश में दस साल की उम्र मे दादी इनके लिए ताजिया जुलूस का आशीर्वाद लेना चाहती थी लेकिन इन्होंने इसका विरोध किया और ताजिये के नीचे जाने से मना कर दिया। इसके उपरान्त तो मुनि जी समाज की अतार्किक रूढ़ियों को तोड़ते ही चले गये। मुनि जी ऊँच–नीच का महत्व भी स्वीकार नहीं करते थे इसलिए नीची जाति वालों के घर खाना खाने में भी इन्हें कोई परहेज नही था। जब इस घटना का पता इनके कुटुम्ब तथा जाति वालों को हुआ तो इन्हें हिंदू जाति से बहिष्कृत कर दिया गया तथा सलाह दी गयी कि पुनः जाति में लौटना चाहते हो तो बनारस जाकर गंगा स्नान करके आओ। गंगा स्नान की सलाह मानना तो दूर उलटे इन्होने ईसाई धर्म अपनाने की घोषणा कर दी। इनका दृढ निश्चय रामानुजगंज में चर्चा का विषय बन गया कि सेठ घुडामल का बेटा ईसाई बनने जा रहा है। उस समय आर्य समाज के आंदोलन का समाज पर अच्छा खासा प्रभाव था। आर्य समाज की ओर से इन्हें समझाने के लिए डॉक्टर दुखन राम तथा रामगोपाल साल वाले रामानुजगंज आए तथा इन्हें ईसाई बनने से रोका। इन्होनें आर्य समाज में दीक्षा ले ली तथा पुरोहित का कार्य करने लगे। स्थानीय ब्राह्मणों ने अनुनय विनय करके इन्हें समझाया कि वह ऐसा न करे क्योकि इससे पारंपरिक ब्राम्हाणों की रोजी रोटी प्रभावित हो रही है। तब ये पुरोहित कार्य छोड़कर पुनः अग्रवाल बन गए। इनके अस्थिर चित्त और स्वच्छंद मन को बांधने के निमित्त परिजनों ने इनकी शादी कर दी। लेकिन इनके युवा मन ने समाज व्यवस्था से लड़ने के लिए एक दूसरा रास्ता खोज निकाला। आर्य समाज में जाने के बाद ये चिंतन–मनन करने लगे। इसी क्रम में एक बार यह डॉ राम मनोहर लोहिया का भाषण सुनने डाल्टेनगंज चले गये। वहां से लौटे तो पक्के समाजवादी बन गए। रामानुजगंज में इन्होने सोशलिस्ट पार्टी का कार्य शुरू कर दिया, तब के प्रसिद्ध समाजवादी नेता पुरन चंद्र रामानुजगंज

आये और इन्हे पार्टी के बेसिक सिद्धान्त से अवगत कराया। उस समय रामानुजगंज जैसे छोटे कस्बे में सोशलिस्ट पार्टी को कोई नही जानता था। इन्होने क्षेत्र में पार्टी को फर्श से अर्श तक पहुंचाया तथा रामानुजगंज नगर पालिका पर इनकी पार्टी का वर्चस्व हो गया।

तब उम्र कम होने के कारण ये नगर पालिका का चेयरमैन तो नही बन पाये लेकिन चेयरमैन इन्ही का आज्ञाकारी बना। परिवार और समाज सुधार के कार्यो को आगे बढाते हुए ये राजनीतिक सुधारों की और निकल आये। महज तीन चार साल में सोशलिस्ट पार्टी को छोडकर 1959–60 मे ये तब के जनसंघ मे शामिल हो गये। आर्य समाज और सोशलिस्ट पार्टी के चिन्तन से यह इतने प्रभावित हुए कि फिर कभी इनके मन से इसका प्रभाव समाप्त न हो सका। इस बीच 1952 तथा 57 के दोनो चुनाव हारकर डा लोहिया भी जनसंघ में समाजवाद की परिकल्पना खोजने लगे थे। कांग्रेस को हराने के लिये तब डा लोहिया जैसे प्रकांड विद्वान और वक्ता की आवश्यकता जनसंघ को भी महसूस होने लगी थी। मुनि जी आर्य समाज का आचरण और सोशलिस्ट पार्टी का विचार लेकर जनसंघ मे आ गये तथा जमकर राजनीति की तो ये रामानुजगंज नगर पालिका मे चेयरमैन बन गये।

बजरंग मुनि के चिन्तन को समझने के लिए इनकी 2–3 प्रवृतियां समझने लायक हैं। उनकी दृढ़ लेकिन स्वच्छंद मनः स्थिति ने रामानुजगंज में इन्हें दबंग की छवी प्रदान की । इन्हे अनेक अवसरो पर पंचायत निपटाने के लिए बुलाया जाने लगा। रामानुजगंज में चोरी, डकैती, राहजनी तथा गुंडागर्दी रोककर इन्होने देश के सामने एक मिशाल पेश की कि एक साधारण नगर नगर पालिका चेयरमैन की दृढ इच्छा शक्ति के बल पर अपराध को नियंत्रित किया जा सकता है। यह वही काल था जब चीनी युद्ध मे भारी फजीहत झेलकर जवाहरलाल नेहरू का अवसान हो चुका था। लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री बने। पुनः पाकिस्तान के साथ युद्ध छिड़ गया। भारतीय फौज ने पाक फौज को कराची तक खदेड कर पीटा और पाकिस्तान की बुरी पराजय हुई। देश को खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त हुआ। उस समय देश के पास खाद्यान्न की भारी किल्लत थी। अमेरिका ने गुस्से में खाद्यान्न देना बंद कर दिया था। लाल बहादुर शास्त्री ने जय जवान–जय किसान का नारा लगाया। उन्होंने देशवासियों को सप्ताह में 1 दिन उपवास करने की सलाह दी।

भारत–पाक युद्ध के काल में श्री बजरंग मुनि की छवि एक दबंग, न्याय प्रिय तथा दृढ़ निश्चयी युवा की थी लेकिन परिस्थितियों को समझते–समझते देश काल से समन्वय स्थापित करने वाले गंभीर युवक की बन गई थी। प्रधानमंत्री के आह्वान पर श्री बजरंग मुनि ने 27 साल की उम्र में खेती करने की सोची। जमीन खरीदी और पहले साल मिर्च की खेती की। संसाधन तो थे नहीं, पहले दो दोस्तों के साथ मिलकर खेती शुरू की, लेकिन दोस्त तुरंत ही भाग गये। पहले साल कठिन श्रम के बल पर खेती की और अगले साल से संसाधनों की व्यवस्था कर नियमित रूप से खेती करनी

शुरू कर दी। फिर 1996 तक उन्होंने अपने को खेती–किसानी से जोड़े रखा।

श्री बजरंग मुनि का जिज्ञासु लेकिन विद्रोही मन सामने आने वाली हर समस्य और व्यवहार के पीछे के कारणो पर अपना ठोस, स्पष्ट और व्यवहारिक मत प्रस्तुत करने लगा। अपराध नियंत्रण के बल पर रामानुजगंज में इनकी छवी राबिन हुड के जैसी स्थापित हो गई। ठीक इसी तरह इन्होने नक्सली आंदोलन को भी कस्बे और आसपास के क्षेत्र मे घुसने नही दिया। तब तक इंदिरा गांधी ने आजाद भारत की तीसरी लडाई शुरू कर दी। बंगला देश ने आजाद देश के रूप मे जन्म लिया। पाकिस्तान सिकुडकर छोटा हो गया। बंगला देश की विजय ने इंदिरा गांधी को निरंकुश बना दिया। संजय गांधी की गुंडागर्दी सर चढकर बोलने लगी। भ्रष्टाचार चरम पर पहुंच गया। जय प्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रान्ति का आहवान किया। पूरे देश मे आंदोलन की हवा चल निकली। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक निर्णय ने जिसमे इंदिरा गांधी के चुनाव को अवैध घोषित कर दिया, इस घटना ने आग में घी का काम किया। इंदिरा गांधी ने देश मे आपात काल की घोषणा कर दी। जय प्रकाश नारायण आन्दोलन जोर पकड़ता चला गया जिससे देश का राजनीति परिदृश्य बदल गया और देशभर मे गिरफतारियां शुरू हो गयी। जनसंघ ने आगे आकर इस लडाई को जमकर लडा। बजरंग मुनि भी जेल गये और आपातकाल के हटने तक जेल मे रहे। इनके जेल गमन ने इनको और तपा हुआ राजनेता बना दिया। ये जनसंघ के सरगुजा जिले के अध्यक्ष थे। आपातकाल हटने के बाद 1977 के शुरूआती दिनो मे देश मे संसद तथा विधान सभा के चुनाव हुए। अपनी पार्टी के उम्मीदवारों को विजयी बनाने के लिये इन्होने जमकर प्रचार किया। सभी पार्टी उम्मीदवार विजयी हुए। कांग्रेस पार्टी को हर क्षेत्र मे हार का सामना करना पडा। केन्द्र सरकार में सरगुजा जिले से एक मंत्री बने तथा उस समय के अविभाजित मध्यप्रदेश की सरकार मे एक मंत्री बनाये गये। मुनि जी का प्रभाव था कि दोनो ही मंत्री इनके निकट के मित्र ही चुने गये। तब ये सरगुजा जिले के जनता पार्टी के अध्यक्ष थे। इनका कद भी राजनीति मे बढा। इसके पहले ये जनसंघ के भी अध्यक्ष रहे थे तथा बाद मे जनता पार्टी के टुटने पर भाजपा के जिलाध्यक्ष भी बनाये गये।

बजरंग मुनि जो भी कार्य करते थे पूरे मनोयोग से करते थे। ये व्यापार एवं कृषि कार्य भी पूरी तन्मयता से करते थे। अपने हाथ से हल तक चलाया। इसके बावजूद समाजशास्त्र पर अपने शोध प्रबंध का कार्य कभी शिथिल नही होने दिया। इनके व्यक्तित्व में धारा के विपरीत सामाज व्यवस्था के सिद्धान्त गढ़ने की अद्वितीय क्षमता रही है। इसी क्रम में इन्होंने नगर पंचायत रामानुजगंज के अध्यक्ष पद पर रहते हुए नारा दिया कि गर्व से कहो हम दो नंबरी हैं। इनका मत था कि भ्रष्टाचार को हम रोक तो नही सकते हैं लेकिन नियंत्रित कर सकते हैं। इन्होने शुरूआत से ही महात्मागांधी के सत्ता विकेन्द्रियकरण के सिद्धान्त को उचित ठहराया। इन्होने रामचन्द्रपुर विकास

खण्ड के 130 गांव में ग्राम सभा सशक्तिकरण अभियान चलाया। इन्होने ज्ञान यज्ञ मंडल की स्थापना की और ज्ञान तत्व नामक पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। इनके बडे से बगीचे के बीच स्थापित कुटीर में देशभर से मनीषियो का आगमन और जमावडा होने लगा। विचार मंथन का क्रम दिन रात चलता रहता। कभी कभी ज्ञानयज्ञ आश्रम के तत्वावधान में विचार मंथन हेतु चिंतको का दल देश भ्रमण के लिए निकल पडता था। इनके चिंतन शिविरो मे संविधान मे समग्र बदलाव की आवाज बुलंद होने लगी। इस दौरान मुनि जी ने 'भावी भारत का संविधान' नामक पुस्तक लिखी। देश भर में यह चिंतन क्रम लंबे दौर तक चला। इस दौरान बजरंग मुनि ने स्वयं को पारिवारिक दायित्वो से मुक्त कर लिया।

आपातकाल के बाद देश प्रदेश में जनता पार्टी की सरकार बनी और 2 साल बाद पुनः इंदिरा गांधी और कांग्रेस को देश प्रदेश में भारी विजय हाथ लगी। जनता पार्टी के टूटने के बाद मुनि जी भाजपा के जिलाध्यक्ष बने रहे और धीरे–धीरे इन्हें राजनीति से वितृष्णा होने लगी। सरगुजा जिले की राजनीति में वही होता था जो बजरंग मुनि की तिकड़ी तय करती थी। उस समय इनके दो अन्य साथी रोशन लाल अग्रवाल और केशव चौबे थे। यह तीनों सरगुजा की राजनीति की नीतियां तय करते थे। जब मुनि जी ने राजनीति छोड़ने का ऐलान किया तो मित्र गणों और कई राजनेताओं ने इन पर बहुत दबाव डाला कि राजनीति मत छोड़िए लेकिन इन्होने अपनी दिशा तय कर ली थी।

रामानुजगंज नगरपालिका अध्यक्ष रहते हुए इन्होने 15 अगस्त के ध्वजारोहण कार्यक्रम में व्यवस्था द्वारा लिखित भाषण देने से मना कर दिया। जिला पदाधिकारी इन्हें समझाने के लिए रामानुजगंज आए। इन्होंने व्यवस्था संबंधी प्रश्न खड़ा किया कि मुझे शासन की ओर से लिखित भाषण का वाचन करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है। प्रशासन को अपना आदेश वापस लेना पड़ा और उक्त अवसर पर मुनि जी ने वही भाषण दिया जो उनको स्वतः स्फूर्त देना था। 1995 में मुनि जी ने एक आंदोलन चलाया कि नेता बेईमान हैं और संत गुरु नाकाम हैं। इसका प्रभाव यह रहा कि इनके विरोधियों ने इन्हें जान से मारने की योजना बनायी। जब उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली तो इन पर यह आरोप लगाया गया कि इनका संबंध नक्सलियों से है और यह सरकार के खिलाफ एक समानांतर सरकार चला रहे हैं। जबलपुर हाईकोर्ट में यह मामला पहुंचा। इस बीच सरकार के साथ इनका सांप सीढ़ी का खेल चलता रहा। सरकार ने इन्हें जितना झुकाने का प्रयास किया लेकिन विपरीत परिस्थितियों में भी इन्होने अपना रास्ता नहीं छोड़ा और इनकी विचार प्रखरता बढ़ती चली गयी। उस समय बजरंग मुनि ने पूरी तन्मयता से अपने विरूद्ध दर्ज मुकदमा लड़ा और विजयी हुए।

मुनि जी ने 1984 में सक्रिय राजनीति छोड़ दी और विचार मंथन, लेखन, चर्चा तथा ज्ञान तत्व की मीमांसा तक अपने को सीमित कर लिया। इस दौरान इन्होने रामानुजगंज में देश के अनेक

बुद्धिजीवी, चिंतक तथा समाज के लिए कार्य करने वाले लोगों को अनेक बार बहस के लिए आमंत्रित किया। इन्होने समाज से संबधित लगभग पांच सौ विषयों को सूचीबद्ध किया और समाज व्यवस्था की अनेक परिभाषाओं का पुनर्लेखन किया। सन् 2004 में रामानुजगंज से दिल्ली प्रवास पर चले गए। वहां इन्होने रोहिणी में अपना आश्रम खोला और उसमें 2009 तक रहे। इन्होने 5 साल में यह निष्कर्ष निकाला कि दिल्ली मतलबियो का केंद्र है। यहां लोग आएंगे भाषण देंगे और फिर अपने रास्ते निकल जाएंगे! एक किंकर्तव्यविमुढ़ स्थिति में ये पुनः अंबिकापुर लौट आए। 2009 से 2016 तक यह अंबिकापुर में ही रहकर ज्ञान चर्चा चलाते रहे।

सन् 2016 के बाद ये आध्यात्मिक नगरी ऋषिकेश चले गये। वहां इनके आवास पर देश भर के मनीषियों का जमावड़ा लगने लगा। चर्चा परिचर्चा और ज्ञानयज्ञ के कार्य नियमित रूप से चलने लगे। इन्होंने ऋषिकेश में 2019 में एक 15 दिवसीय ज्ञान कुंभ का आयोजन किया तदोपरांत फरवरी 2020 में देश की दिशा दशा पर चर्चा के लिए दिल्ली मे तीन दिन का एक आयोजन किया। उसके बाद यह पुनः ऋषिकेश लौट आए।

कोरोना काल में मुनि जी ऋषिकेश की अपनी गतिविधियों को बंद कर रायपुर लौट आए। इनके साथियों ने इन्हें सलाह दी कि रायपुर को केंद्र बनाकर आगे का जागरण अभियान चलाना ठीक रहेगा। धीरे–धीरे दुनिया कोरोना महामारी से उबरी। ऋषिकेश, दिल्ली, रामानुजगंज, अंबिकापुर आदि के पुराने साथी रायपुर में इकट्ठा होते गए। मुनि जी ने दिसंबर 2020 में अपने को ज्ञान मंथन तक सीमित कर लिया।

श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के दायित्व मुक्त होने से उत्पन्न आर्थिक परिस्थितियों एवं ज्ञानतत्व पत्रिका का प्रकाशन एवं वितरण सुचारु रूप से ना हो पाने के कारण लिए गए कुछ निर्णयों से आपको अवगत कराना है।

१. **''ज्ञान तत्व'' पाक्षिक पत्रिका की डिजिटल कापी का प्रकाशन संस्थान द्वारा सर्वसाधारण के लिए नियमित रूप से किया जाएगा।**

२. **जिनका शुल्क 30 दिसम्बर 2023 के पहले संस्थान के खाते में आ चुका है, 1 जनवरी 2024 के बाद 250रु वार्षिक शुल्क संस्थान के खाते में जमा करा देंगे अथवा भुगतान करने का आवासन देंगे उन्हें ही छपी पत्रिक भेजी जाएंगी।**

३ **ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का डिजिटल लिंक अथवा प्रिंटेड पत्रिका पाने के लिए 7869250001 पर सम्पर्क करें अथवा MARDARSAK.INFO से वेबसाइड वा App भी डाउनलोड कर सकते है।**

हमारी संस्थाएँ

- मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान
- ज्ञान यज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य

- समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार के कार्य

- देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

- ज्ञान चर्चा- प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।
- ज्ञान मंथन- प्रत्येक रविवार को जूम एप के माध्यम से दोपहर ग्यारह बजे बजरंग मुनि जी द्वारा पूर्व निर्धारित विषय पर विचार प्रस्तुति तथा सोमवार को ग्यारह बजे उक्त विषय पर प्रश्नोत्तर ।
- मार्गदर्शक मंडल- ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।
- ज्ञान कुंभ- वर्ष मे दो बार पंद्रह-पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमे मार्ग दर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो-दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- फेसबुक एप से प्रसारण
- वाट्सएप ग्रुप से प्रसारण
- जूम एप पर वेबिनार
- यू टयूब चैनल
- इस्टाग्राम
- टेलीग्राम
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरु हो गया है। इसकी सहयोग राशि रु. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है। लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक-68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक- छ.ग./रायगढ़/010/2022-2024

प्रति,

श्री/श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोक तंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रुपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

- बजरंगलाल

पत्र व्यवहार का पता

पता - बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492001
Website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी - बजरंगलाल

09617079344

Email : bajrang.muni@gmail.com
support@margdarshak.info
Facebook Id : बजरंग मुनि (User Name)

मुद्रक - माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)